Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

आधुनिक कला की अवधारणा

Prashant Kumar[1]* Dr. Jai Shankar Mishra[2]

[1] Research Scholar, Fine Arts, Raja Mansingh Tomar Music & Arts University, Gwalior

[2] Assistant Professor, Visual Arts, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramoday Vishwavidyalaya, Chitrakoot

सार – *'कला' मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। 'कला' कल्याण की जननी है। कल्पना की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति का नाम ही कला है। कल्पना की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार से एवम् विभिन्न माध्यमों द्वारा हो सकती है। यह अभिव्यक्ति जिस भी माध्यम एवम् जिस भी प्रकार से हो वही कला का पर्याय कहलाती है।*

----------X----------

1. कला की अवधारणा

भारतीय कला 'दर्शन' है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि सर्वप्रथम 'कला' शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ है -

"यथा कला, यथा शफ, मध, शृण स नियामति।"

व कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग 'भरत मुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया-

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विधा-न सा कला।"[1]

अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विधा नहीं, जो कला न हो। भरत मुनि, ज्ञान, शिल्प और विधा से भी अलग 'कला' का क्या अभिप्राय ग्रहण करते थे, यह कहना कठिन है अनुमान यही लगता है कि भरत के द्वारा प्रयुक्त 'कला' शब्द यहाँ 'ललित कला' के निकट है और 'शिल्प' शायद उपयोगी कला के लिये। हमारे यहाँ कला उन सारी जानकारियों या क्रियाओं को कहते हैं, जिसमें थोड़ी सी भी चतुराई की आवश्यकता है।

कला का अर्थ है-सुन्दर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला एवं शिल्प, हुनर अथवा कौशल। कला के संबंध में 'पाश्चात्य दृष्टिकोण' भी कुछ इसी प्रकार का है- अंग्रेजी भाषा में कला को 'आर्ट' कहा गया है। फ्रेंच में 'आर्ट' और लेटिन में 'आर्टम' और 'आर्स' से कला को व्यक्त किया गया है। यहाँ शारीरिक या मानसिक कौशल 'आर्ट' माना गया है। इनके अर्थ वे ही हैं, जो संस्कृत भाषा में मूल धातु 'अर' के हैं। 'अर' का अर्थ है- बनाना, पैदा करना या रचना करना। इन अर्थों के अन्तर्गत कुछ सुखद, सुन्दर एवं मधुर सृजन है। कला शिल्प कौशल की प्रक्रिया है। अतः कला का अर्थ है- "शिल्प कौशल की प्रक्रिया से युक्त सुन्दर व सुखद सृजन रूप।" दूसरे शब्दों में "सत्यं, शिव्, सुन्दरम् की अभिव्यक्ति ही कला है।

2. कला की पश्चिमी अवधारणा

कला का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। कला के सम्बन्ध में जिस प्रकार भारतीय दार्शनिकों, विद्वानों विचारकों और साहित्यकारों ने अपने विचार प्रकट किए हैं, परिभाषाएँ दी हैं, उसी प्रकार पश्चिमी विद्वानों ने भी कला को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है।

महान् विचारक प्लेटो ने कला के विषय में अनेक ठोस विचार रखे। प्लेटो के अनुसार-प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर वस्तु को अपना प्रेमास्पद चुनता है, अतः कला का प्राण सौन्दर्य है। उन्होंने कला को 'सत्य' की अनुकृति की अनुकृति माना है।[2] अरस्तु उसे अनुकरण कहते है।[3] हीगेल ने कला को आदिभौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है। क्रौचे की दृष्टि से कला बाह्य प्रभाव की आन्तरिक अभिव्यक्ति है।[4] टॉलस्टॉय की दृष्टि में क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि, शब्द आदि के द्वारा भावों की वह अभिव्यक्ति जो श्रोता, दर्शक और पाठक के मन में भी वही भाव जागृत कर दे, 'कला' है।[5] फ्रायड ने कला को मानव की दमित वासनाओं का उभार माना है। हरबर्ट रीड़ अभिव्यक्ति के आल्हादक या रंजक स्वरूप को कला मानते है।[6]

भारतीय व पाश्चात्य विचारकों ने कला की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ करते हुए कला के अनेक पहलुओं को हमारे समक्ष

www.ignited.in

रखा है। उसकी विविध दिशाओं की ओर इंगित किया है। किसी ने नैतिकता पर बल दिया है तो कोई उसकी सृजनात्मकता पर बल देता है। किसी ने कला को कल्पनाजन्य सृजन का माध्यम बताया है तो किसी ने उसे ईश्वरीय जगत के सामंजस्य का प्रतीक बताया है। कुछ दार्शनिकों ने कला में विचारों की प्रधानता को तरजीह दी है तो कुछ उसे अभिव्यंजना की कला मानते हैं। कला के रूप सौन्दर्य की उपस्थिति का पक्ष भी अनेक विचारकों ने लिया है। कला को कुछ विद्वान सहज ज्ञान से प्रेरित बताते हैं तो कुछ उसे अर्धचेतन मस्तिष्क की उपज कहते हैं। कला वस्तुतः सत्य की अभिव्यक्ति है। सत्य और स्वस्थ कल्पना के अभाव में उसका कोई अस्तित्व नहीं। उसमें विचार तो अवश्य होना चाहिए किन्तु उस पर उपयोगिता और आदर्श का दबाव नहीं होना चाहिए। कला और कलाकार सदैव स्वच्छन्द रहकर ही अपने वास्तविक आदर्श की पूर्ति कर सकते हैं।

3. कला की भारतीय अवधारणा

भारतीय कला चिंतन में सदैव मन की सात्विक प्रवृत्तियों को उजागर करने पर बल दिया गया है। हमारी कला में आत्मचैतन्य की प्रधानता है। कला विचार भौतिक स्वरूप में परिवर्तित होता है लेकिन उसका उद्देश्य मात्र वस्तु के भौतिक स्वरूप को दर्शाना नहीं होता अपितु उसके आन्तरिक लक्षणों को भी दर्शाना होता है। उसमें कलाकार के अतर्मन की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है। वह स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रस्थान करने वाली है। स्थूल में सूक्ष्म की चेतना को जागृत करना ही भारतीय कलाकारों का सर्वोपरि उद्देश्य रहा है।

कला सृजन से मन और आत्मा का साक्षात्कार सौन्दर्य से होता है। उसे शांति मिलती है। कलाकार का सृजन, कला का सृजन है। उसकी अनुभूति कला की अनुभूति है। कला के माध्यम से रूप और सौन्दर्य का सृजन होता है। कला अव्यक्त को व्यक्त करने वाली तथा अमूर्त को मूर्त प्रदान करने वाली है। भारतीय दृष्टिकोण से कला रसानुभूति के लिए किया गया सृजन है। कला मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

अतः दार्शनिकों ने कहा है-"कला ही जीवन है" वास्तव में कला जीवन जीने की पद्धति, जीने का एक ढंग है। कला के द्वारा ही जीवन को पूर्णता व दक्षता के साथ बिताया जा सकता है। कला मानवीय क्रिया है, जिसमें उसकी प्रकृति, रूप और भाव सम्मिलित रहते हैं। सर्वश्रेष्ठ कला सदैव चेतना को स्पर्श करती है।

'नाट्य शास्त्र' में कलाओं का वर्गीकरण 'गौण' एवं 'मुख्य' कला के रूप में किया गया है। वही कला आगे चलकर 'कारू' और 'चारू' कलाएँ कहलाई। जिसे 'आश्रित' और 'स्वतंत्र' कला भी कहा जा सकता है। विद्वानों ने काव्य, संगीत, चित्र-शिल्प, नृत्य-नाट्य और वास्तु सभी में परस्पर तादात्म्य स्थापित करते हुए, इन्हें ग्रंथों में सम्मिलित किया है। ये सभी ललित कलाएँ स्वतंत्र शास्त्र के रूप में पहचानी जाती हैं।

'मार्कण्डेय मुनि' रचित 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' के 'चित्रसूत्र' अध्याय में इसके महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। काव्य की भाँति चित्र को भी धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष देने वाली कला माना गया है। जहाँ इसकी प्रतिष्ठा की जाती है, वहाँ मंगल होता है,

यथा- कलानां प्रवरं चित्र, धर्म कामार्थ मोक्षदम्।

मांगल्यं प्रथमं चैतद्, गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।

4. कला का आधुनिक स्वरूप

समकालीनता या आधुनिक शब्द से आशय निर्माण अथवा रचना करना है जो मानव की सहज वृत्ति है। कला के सन्दर्भ में समकालीनता या आधुनिकता कला और कलाकार के नवीन प्रवत्र्तन का सूचक है। आधुनिक कला का आधुनिक होना, कला परम्पराओं और विभिन्न कला रूपों से उसका कट जाना नहीं है। दुर्भाग्य से यह एक भ्रान्ति फैली है कि आधुनिक कला का वास्ता तथाकथित आधुनिक रूपों को छोड़कर अन्य दूसरे कला रूपों से नहीं हैं और न ही शायद होना चाहिए। समकालीन कला की विशेषता है कि वह न तो पुरातन से जुड़ी है न किसी एक धारा वाद, विचार और नियमों से निर्देशित है तथा न ही किसी परम्परा और इतिहास को पूर्णतः नकारती है, उसमें स्वीकार-अस्वीकार का मिश्रण है। यह अन्तर्राष्ट्रीयता, साहस तथा निरन्तर अन्वेषणमुखी और एक सीमा तक अराजक भी हैं।[7]

कला में प्रचलित विभिन्न शैलियों तथा प्रवृत्तियों के संदर्भ में समसामयिक एवं आधुनिकता प्रायः समानार्थी शब्द रहे हैं। आधुनिकता भौगोलिक परिवेश, यान्त्रिकता, फैशन या जड़वाद नहीं हैं तथा न ही सामाजिक पुनर्निमाण की परिकल्पना है। वर्तमान में जिन वस्तुओं का अस्तित्व है, यह तो उन्हें भी पूरी तरह परिमित नहीं करती। कला साहित्य अथवा अन्य सृजनात्मक गतिविधियों में आधुनिकता का आकलन एक ज्वलन्त समस्या या प्रश्न है जो जटिल होने के साथ विविध प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है तथा किसी भी प्रकार के विश्लेषण से दूर है। एक वर्ग के लिए आधुनिकता यान्त्रिकता की समानार्थी है जो अंशतः अश्लील तथा अवनत

www.ignited.in

भी है। दूसरा वर्ग आधुनिकता को पाश्चात्य भौतिक सभ्यता का द्योतक समझता हैं। नयी पीढ़ी आधुनिकता को सामाजिक संगठन का एक 'परिवर्तनकारी सिद्धान्त' मानती है, जिसमें पारम्परिकता को सहज रूप में त्यागने की भावना निहित है। आधुनिकता का प्रमुख तत्व सचेतना है। मानव के इच्छित प्रयासों द्वारा एकांगिता एवं तनाव से उत्पन्न द्वन्द्व का नवीन प्रस्तुतीकरण ही आधुनिकता है जो समयानुसार मानवीय गतिविधियों को स्थिरता तथा विविध दिशाएं देती है।[8]

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थिति में आये बदलाव व वैचारिक क्रान्ति के साथ कदम बढाते हुए योरोपीय कलाकारों ने स्वतन्त्र होकर निजी प्रेरणा से कला सर्जन शुरू किया। प्रभाववादियों ने अमिश्रित रंगों व स्पष्ट तूलिकाघातों का चित्रण में प्रयोग कर भविष्य के कलाकारों का ध्यान विषय की अपेक्षा माध्यम के स्वाभाविक गुणों की रक्षा करने के महत्व की ओर आकर्षित किया। उनकी कला में मानवीय भावनाओं का कोई महत्व नहीं था। अभिव्यक्ति के विचार से आधुनिक कला में सबसे क्रान्तिकारी कदम सर्वप्रथम उत्तर-प्रभाववादी कलाकारों ने उठाये यद्यपि उनकी अंकन पद्धति का आरंभिक आधार प्रभाववाद ही था। ये कलाकार थे सेजान, गोग्वं, वान गो व सोरा। इन्होंने अनुभव किया कि नैसर्गिक रूप से सादृश्य से कलाकृति इतनी प्रभावी नहीं बनती जितनी कि रचना सिद्धान्तों के मौलिक प्रयोग से या कल्पना की सहायता से; इसके अलावा नैसर्गिक रूप की नकल मात्र करने में कलाकार को मौलिक सृजन का आनंद नहीं मिल पाता न अपने करने का सुख। यहीं से आधुनिक कला की अग्रिम यात्रा विभिन्न दिशाओं में आरम्भ हुई।[9]

समकालीन अथवा आधुनिक कला वस्तुतः बीसवीं शताब्दी की कलाओं की हलचल व उत्तेजना भरी गतिविधियों की द्योतक है। कुछ लोगों ने इस कला को वर्तमान शताब्दी की असंगति की प्रवक्ता कहा है। उनका कहना है कि हलचल भरी गतिविधि के पीछे कोई अनुभूति या आस्था नहीं है। आधुनिक कला आंदोलन में अंतर्दृष्टि की समग्रता नहीं है। आधुनिक कलाकारों ने जीवन के यथार्थ को टुकड़ों में ही देखा है। हमें इस कथन पर भी ध्यान देना चाहिए, जो सेज़ां ने अपने मित्र विलॉर्ड से कहा था: "अंतर्दृष्टि का चित्रांकन आसान है लेकिन संवेदन का चित्रांकन बड़ा तकलीफदेह है।"[10] अधिकांश आधुनिक कलाकार इन संवेदनों का अनुभव करने की खोज में संलग्न थे, न कि अंतर्दृष्टि के चित्रांकन में।

संदर्भ ग्रंथ

1. भरतमुनि: नाट्यशास्त्र, 1/116
2. स्कॉट जेम्स: दि मेकिंग ऑफ़ लिटरेचर, पृष्ठ 37-46
3. अनुवादक-डॉ. नगेन्द्रः अरस्तु काव्यशास्त्र, पृष्ठ-6
4. क्रौचे बेनादेत्तो: एस्थैटिक, पृष्ठ-13
5. टॉलस्टॉय: व्हाट इज आर्ट, पृष्ठ-123
6. हरबर्ट रीड: दि मीनिंग ऑफ़ आर्ट, पृष्ठ-16
7. ए.एल. दमामी: राजस्थानी की आधुनिक कला एवं कलाविद्, पृष्ठ 115
8. डॉ. ममता चतुर्वेदी: समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ-2
9. र.वि. साखलकर: कला के अन्तदर्शन, पृष्ठ-125
10. प्राण नाथ मागो:भारत की समकालीन कला-एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ-11

Corresponding Author

Prashant Kumar*

Research Scholar, Fine Arts, Raja Mansingh Tomar Music & Arts University, Gwalior